International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, July-December 2017, Submitted in November 2017, iajesm2014@gmail.com

समकालीन साहित्य तथा मानवीय मूल्य

डॉ सुमन बाला, सहायक आचार्या (हिंदी), डॉ मोहन लाल पीरामल बालिका पी जी महाविद्यालय, बगड़, झुंझुनू

सार

यह पारदर्शी है कि साहित्य बहुमुखी आयाम दिखाता है और जीवन के हर पहलू से कमोबेश निपटता है। यह उल्लेखनीय है कि विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक या बौद्धिक पृष्ठभूमि के अलग–अलग लोगों के मामले में एक ही साहित्यिक कार्य के अंतःकरण में ग्रहण करने का दृष्टिकोण और अंतरात्मा में डालने की डिग्री अलग–अलग हो सकती है। साहित्य में बहुत से उत्तेजक तत्व हैं जो जीवन को प्रभावित कर सकते हैं। उसी के अनुसार उसे हथियाना होता है। अतरू वर्तमान शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य साहित्य और मानव जीवन पर उसके प्रभाव और प्रभाव का संक्षिप्त विश्लेषण करना है। एक शिक्षाप्रद स्रोत के रूप में, साहित्य मानव जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साहित्य प्रत्यक्ष या निहित नैतिकता के साथ काम करता है। विभिन्न शैलियों से बहुत सारे उदाहरण लिए जा सकते हैं।

परिचय

दार्शनिक विचारों को सर्वाधिक प्राचीन चिंतनशील सृजनात्मकता माना जाता है। साहित्य के विभिन्न प्रकार होते हैं, मौखिक साहित्य, लिखित साहित्य, वैज्ञानिक साहित्य, तकनीकी साहित्य। यह विभिन्न स्तरों पर विभिन्न कार्य करता है। साहित्य और समाज का जीवन एक दूसरे पर प्रतिबिंबित होता है। जीवन एक समाज के साहित्य को ढालता है और साहित्य किसी भी समाज के वास्तविक स्वरूप को दर्शाता है। अत समय के क्रमिक बीतने के बाद यह सिद्ध हो जाता है कि साहित्य का जीवन पर बहुत हद तक गहरा प्रभाव अवश्य पड़ता है। साहित्य हमें प्रभावित करता है और हमें जीवन के हर क्षेत्र को समझने में मदद करता है। आख्यान, विशेष रूप से, सहानुभूति को प्रेरित करते हैं और लोगों को उनके जीवन और दूसरों के जीवन पर एक नया दृष्टिकोण देते हैं।[1]

प्राचीन परिवेश में साहित्य का प्राथमिक उपयोग रीति–रिवाजों, परंपराओं, विश्वासों और भावनाओं को युवा पीढ़ी तक पहुँचाना था। हाल की सदियों में, साहित्य ने समाज को प्रतिबिंबित करने की अधिक व्यापक भूमिका निभाई है ताकि मानव स्वयं का अध्ययन कर सके और सभी लोगों के लिए सामान्य अंतर्निहित सत्य को समझ सके। छात्रों के लिए, साहित्य का अध्ययन शिक्षा का एक महत्वपूर्ण घटक है, क्योंकि यह छात्रों को खुद को कला में प्रतिबिंबित होते देखना सिखाता है। इससे लोग दूसरे के दृष्टिकोण से जीवन के बारे में सीख सकते हैं। पहचान–आधारित साहित्य पाठकों को सिखाता है कि जीवन दूसरों के लिए कैसा है, जिससे उन्हें अपने आसपास के लोगों के बारे में अधिक समझने और सम्मान करने में मदद मिलती है। कलाओं में, साहित्य, विशेष रूप से, जीवन के दृष्टिकोण के माध्यम से ष्सत्यष् का दावा करने लगता है, जो प्रत्येक कलात्मक रूप से सुसंगत कार्य के पास होता है। दार्शनिक या आलोचक को इन षविचारोंष में से कुछ को दूसरों की तुलना में अधिक सत्य मानना चाहिए, लेकिन जीवन के किसी भी परिपक्व दर्शन में कुछ हद तक सत्य होना चाहिए, किसी भी घटना पर यह दावा करता है। साहित्य की सच्चाई, जैसा कि हम अब इस पर विचार कर रहे हैं, साहित्य में सच्चाई प्रतीत होती है–दर्शन जो मौजूद है, व्यवस्थित वैचारिक रूप में, साहित्य के बाहर, लेकिन साहित्य पर लागू या सचित्र या सन्निहित हो सकता है। ष्सत्यष् के संबंध में एलियट का कविता का दृ ष्टिकोण अनिवार्य रूप से इस प्रकार का प्रतीत होता है। सत्य व्यवस्थित विचारकों का प्रांत हैय और कलाकार विचारक नहीं हैं, हालांकि वे ऐसा होने की कोशिश कर सकते हैं यदि कोई दर्शनशास्त्र नहीं है जिसका काम वे उपयुक्त रूप से आत्मसात कर सकते हैं।[2]

समाज की आंतरिक वास्तविकताओं के विकास और व्याख्या में साहित्य का बहुत महत्व है। साहित्य और समाज के संबंधों के लिए सबसे आम दृष्टिकोण सामाजिक दस्तावेज के रूप में साहित्य के कार्यों का अध्ययन है, जैसा कि सामाजिक वास्तविकता की कल्पना की गई तस्वीरें हैं। इसमें संदेह नहीं किया जा सकता कि साहित्य से किसी प्रकार की सामाजिक तस्वीर को अमूर्त किया जा सकता है। वास्तव में, व्यवस्थित छात्रों द्वारा साहित्य के लिए यह सबसे प्रारंभिक उपयोगों में से एक रहा है। थॉमस वार्टन, अंग्रेजी कविता के पहले वास्तविक इतिहासकार, ने तर्क दिया कि साहित्य में ष्समय की विशेषताओं को ईमानदारी से रिकॉर्ड करने और शिष्टाचार के सबसे सुरम्य और अभिव्यंजक प्रतिनिधित्व को संरक्षित करने की अजीबोगरीब योग्यताष हैय और उनके और उनके कई पुरातात्त्विक उत्तराधिकारियों के लिए, साहित्य मुख्य रूप से वेशभूषा और रीति–रिवाजों का खजाना था, जो सभ्यता के इतिहास के लिए एक स्रोत पुस्तक थी, विशेष रूप से शिष्टता और उसके पतन की।

साहित्य का मानव जीवन और उसकी वास्तविकताओं से गहरा और सीधा संबंध है। यह एक अस्पष्ट अवधारणा है कि साहित्य एक ऐसी चीज है जिसका केवल एक अमूर्त महत्व है और यह कि साहित्य जीवन से पूरी तरह से अलग है। और समान रूप से अस्पष्ट अवधारणा है कि साहित्य कल्पना और कल्पना की भूमि का निवासी है। यह इससे कहीं अधिक है। वास्तव में जीवन और साहित्य दो अलग–अलग चीजें हैं। एक रचनात्मक साहित्य वास्तविक स्थितियों और जीवन की घटनाओं से बाहर निकलता है और रचनात्मक और रचनात्मक साहित्य के बिना, कोई आंतरिक महत्व नहीं होता है। साहित्य मानव द्वारा अकेले, अकेले के माध्यम से प्रज्वलित ट्रेल्स में से एक है। दैनिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाने के बाद मनुष्य जिज्ञासा की अगुवाई करता है और जीवन के रहस्यों की खोज करता है। ज्ञान के लिए जुनून, जीवन को समझने और खुद को ब्रह्मांड में घर बनाने की इच्छा मानव स्वभाव में बारहमासी वसंत है।

शिक्षा के माध्यम से संस्कृति नई पीढ़ियों को हस्तांतरित होती है, लेकिन अन्य संस्कृतियों द्वारा जानी और सीखी जाती है। साहित्य हमें एक निश्चित संस्कृति, इसकी रूढ़िवादिता, पुरातनपंथी और सामूहिक अंतरात्मा के गहरे अर्थ को प्रसारित करने की अनुमति देता है, जो एक आलोचक के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की संभावना पैदा करता है जो भावनाओं की अचेतन दुनिया में कार्य करने में सक्षम है। नैतिक भावनाएँ या नैतिक भावनाएँ अध्ययन के नए मामले हैं जो शोध और विशेष वैज्ञानिक अध्ययन के केंद्र के योग्य हैं। इसके अलावा, साहित्य केवल जानकारी प्रदान करने के बजाय सीखने का एक अलग रूप प्रदान करता हैय इसके लिए हमें अनुभव करने, भाग लेने की आवश्यकता है। साहित्य के कार्य केवल मानवीय मुद्दों के बारे में नहीं हैंय साहित्य की ताकत यह है कि यह पाठक के लिए मुद्दों को जीवंत कर देता है।[3]

यह पारदर्शी है कि साहित्य बहुमुखी आयाम दिखाता है और जीवन के हर पहलू से कमोबेश निपटता है। यह उल्लेखनीय है कि विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक या बौद्धिक पृष्ठभूमि के अलग–अलग लोगों के मामले में एक ही साहित्यिक कार्य के अंतःकरण में ग्रहण करने का दृष्टिकोण और अंतरात्मा में डालने की डिग्री अलग–अलग हो सकती है। साहित्य में बहुत से उत्तेजक तत्व हैं जो जीवन को प्रभावित कर सकते हैं। उसी के अनुसार उसे हथियाना होता है। अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य साहित्य और मानव जीवन पर उसके प्रभाव और प्रभाव का संक्षिप्त विश्लेषण करना है। एक शिक्षाप्रद स्रोत के रूप में, साहित्य मानव जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साहित्य प्रत्यक्ष या निहित नैतिकता के साथ काम करता है। विभिन्न शैलियों से बहुत सारे उदाहरण लिए जा सकते हैं। अतः साहित्य शिक्षा की एक सशक्त शक्ति है।

समकालीन साहित्य तथा मानवीय मूल्य

दार्शनिक विचारों को सर्वाधिक प्राचीन चिंतनशील सृजनात्मकता माना जाता है। साहित्य के विभिन्न प्रकार होते हैं, मौखिक साहित्य, लिखित साहित्य, वैज्ञानिक साहित्य, तकनीकी साहित्य। यह विभिन्न स्तरों पर विभिन्न कार्य करता है। साहित्य और समाज का जीवन एक दूसरे पर प्रतिबिंबित होता है। जीवन एक समाज के साहित्य को ढालता है और साहित्य किसी भी समाज के वास्तविक स्वरूप को दर्शाता है। अतरू समय के क्रमिक बीतने के बाद यह सिद्ध हो जाता है कि साहित्य का जीवन पर बहुत हद तक गहरा प्रभाव अवश्य पड़ता है। साहित्य हमें प्रभावित करता है और हमें जीवन के हर पड़ाव को समझने में मदद करता है। आख्यान, विशेष रूप से, सहानुभूति को प्रेरित करते हैं और लोगों को उनके जीवन और दूसरों के जीवन पर एक नया दृष्टिकोण देते हैं।

साहित्य जीवन से विकसित होता है, जीवन पर प्रतिक्रिया करता है और जीवन से पोषित होता है। आम तौर पर हम कह सकते हैं कि छपी हुई हर चीज साहित्य है। लेकिन यह साहित्य का बहुत अस्पष्ट विवरण होगा। मोटे तौर पर, ष्साहित्यष् का उपयोग रचनात्मक लेखन से लेकर अधिक तकनीकी या वैज्ञानिक कार्यों तक किसी भी चीज का वर्णन करने के लिए किया जाता है, लेकिन इस शब्द का उपयोग आमतौर पर रचनात्मक कल्पना के कार्यों को संदर्भित करने के लिए किया जाता है, जिसमें नाटक, निबंध, कथा और गैर–काल्पनिक कार्य शामिल हैं। कला का कोई भी काम जिसमें भावनात्मक सामग्री प्रबल होती है वह साहित्य है। साहित्य लिखित शब्दों की अभिव्यक्ति है। साहित्य अन्य सभी कलाओं से भिन्न है। इसका अपना कोई माध्यम नहीं है। इसमें साहित्य के अनेक मिश्रित रूप विद्यमान हैं।

आज दुनिया हमेशा बदल रही है। इससे पहले कभी भी सभी के लिए जीवन इतना अराजक और चुनौतीपूर्ण नहीं रहा। साहित्य से पहले का जीवन व्यावहारिक और पूर्वानुमेय था, लेकिन वर्तमान समय में, साहित्य अनगिनत पुस्तकालयों में और मानव मन और उनके आसपास की दुनिया की समझ और जिज्ञासा के प्रवेश द्वार के रूप में कई लोगों के दिमाग में फैल गया है। साहित्य का बहुत महत्व है और इसका अध्ययन किया जाता है क्योंकि यह मानव संबंधों को जोड़ने की क्षमता प्रदान करता है और परिभाषित करता है कि क्या सही है और क्या गलत है। साहित्य जीवन का आधार है। यह मानव त्रासदियों से लेकर प्यार की हमेशा लोकप्रिय खोज की कहानियों तक कई विषयों पर जोर देती है। जबकि यह शारीरिक रूप से शब्दों में लिखा गया है, ये शब्द मन की कल्पना और पाठ की जटिलता या सरलता को समझने की क्षमता में जीवंत हो जाते हैं। साहित्य लोगों को दूसरों के लेंस के माध्यम से देखने में सक्षम बनाता है, और कभी–कभी निर्जीव वस्तुओं को भीय इसलिए यह दुनिया के लिए एक शीशा बन जाता है जैसा कि दूसरे देखते हैं। यह एक ऐसी यात्रा है जो पन्नों में खुदी हुई है, और पाठक की कल्पना से संचालित है। आखिरकार, साहित्य ने पाठक को जीवन के अनुभवों के बारे में सिखाने के लिए एक प्रवेश द्वार प्रदान किया है, यहां तक कि सबसे दुखद कहानियों से लेकर सबसे आनंदमयी कहानियों तक जो उनके दिल को छू जाएगी।[4]

एक जोड़ी ताजी आँखों से दुनिया को देखने की क्षमता के साथ, यह पाठकों को अपने स्वयं के जीवन पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है। ऐसी सामग्री पढ़ना जो पाठक के लिए विश्वसनीय हो, उन्हें नैतिकता सिखा सकती है और उन्हें अच्छे निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है। यह पब्लिक स्कूल सिस्टम के माध्यम से सिद्ध किया जा सकता है, जहां जिन किताबों पर सबसे ज्यादा जोर दिया जाता है, वे कहानी के पीछे एक नैतिक–शिक्षण उद्देश्य रखते हैं। उत्तरोत्तर, जैसे–जैसे लोग बड़े होते जाते हैं, वे पुस्तकों की अन्य विधाओं की खोज करते हैं, जो उन्हें विषय की जिज्ञासा और समग्र पुस्तक की ओर प्रेरित करती हैं। पढ़ने और साहित्य की दुनिया की कुंजी दिए जाने से लोगों को साहित्य के वास्तविक महत्व की खोज

करने के लिए तैयार किया जाता हैरू विभिन्न दृष्टिकोणों से स्थितियों को समझने और समझने में सक्षम होना।

साहित्य भी धर्म की नींव का एक साधन है। पवित्र बाइबिल, सबसे पुराने लिखित शास्त्रों में से एक है, जो ईसाई धर्म के बारे में सिखाने वाली कहानियों, विश्वासों और खातों का संकलन है। पैगंबर मूसा से प्रेरित पॉल तक एक हजार से अधिक वर्षों की अवधि के भीतर, बाइबिल को कई लेखकों द्वारा लिखा गया था, माना जाता है कि वे भगवान के दिव्य ज्ञान से प्रेरित थे और जीवन के रहस्यों के बारे में समझाने के साथ–साथ एक के लिए नियम निर्धारित करने की कोशिश की थी। की व्यक्तिगत आस्था। मुसलमानों के लिए कुरान, यहूदियों के लिए तोराह और हिंदुओं के लिए भगवद गीता, रामायण और वेदों के साथ भी यही बात लागू होती है। साहित्य मानवीय मूल्यों की व्याख्या करता है।

मूल्य सभी मानवीय व्यवहारों के मूल में हैं। प्रारंभ में, यह माना जाता था कि मानव व्यवहार को किसी की व्यक्तित्व प्रणाली की जरूरतों, उद्देश्यों, विश्वासों, लक्ष्यों, व्यवहार और दृष्टिकोण के संदर्भ में सबसे अच्छी तरह से समझाया जा सकता है। लेकिन अंततरू जोर मूल्यों की ओर स्थानांतरित हो रहा है, क्योंकि मानव व्यवहार के कई पहलू हैं जिन्हें पूर्व अवधारणाओं के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है, लेकिन जहां मूल्य भूमिका निभाते हैं। मूल्य व्यक्ति के जीवन को सार्थक बनाते हैं और दिशा का बोध कराते हैं।[5]

दूसरे शब्दों में, मूल्यों को सच्चे सार्वभौम के रूप में स्वीकार किया गया, जिन्हें सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण गतिविधियों की व्याख्या करने के योग्य के रूप में देखा गया, जिन्होंने सत्य, सौंदर्य और अच्छे जीवन के रूपों के पहलुओं में योगदान दिया। अंत में, ष्उपयोगिताष उप के मूल्य ने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन की निरंतरता को सेवा प्रदान की। सोरोकिन के अनुसार, ये अवधारणाएँ सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण मानवीय गतिविधियों की व्याख्या कर सकती हैं और सच्चे सार्वभौमिकों का प्रतिनिधित्व करने के लिए ली जा सकती हैं।

यह कहा जा सकता है कि मूल्य और आदर्श एक ओर दृश्यमान सामाजिक संरचनाओं और अंतःक्रियाओं को बनाए रखते हैं और उन्हें नियंत्रित करते हैं, और दूसरी ओर उनमें सामंजस्य और स्थिरता प्रदान करते हैं। व्यक्तिपरक और अदृश्य होने के बावजूद, वे समाज के महत्वपूर्ण पहलू हैं और सभी रिश्तों को रेखांकित करते हैं। किसी व्यक्ति के पास मौजूद मूल्य जन्मजात नहीं होते हैं। वे व्यक्ति के समाजीकरण की प्रक्रिया के अंतिम उत्पाद हैं, जो जन्म के समय से शुरू होती है और जीवन भर जारी रहती है। किसी भी वयस्क द्वारा निर्धारित सफलता या असफलता के मानकों को बचपन में सीखे गए मूल्यों में अच्छी तरह से देखा जा सकता है।

एक मूल्य किसी चीज की अवधारणा है जो सामाजिक या व्यक्तिगत रूप से बेहतर है। मूल्यों का यह एक दिलचस्प गुण है कि उन्हें दैनिक जीवन में असाधारण बहुमुखी प्रतिभा के साथ नियोजित किया जा सकता है। उन्हें साझा किया जा सकता है या साझा नहीं किया जा सकता है। वे स्वयं पर या दूसरों पर, दूसरों पर समान रूप से लागू होने के लिए अभिप्रेत हो सकते हैं, लेकिन दूसरों से अधिक स्वयं पर या स्वयं से अधिक दूसरों पर नहीं।

मूल्य स्थायी होते हैं, लेकिन यदि वे पूरी तरह से स्थिर होते, तो व्यक्तिगत और सामाजिक परिवर्तन असंभव होता। यदि मूल्य पूरी तरह से अस्थिर होते तो मानव व्यक्तित्व और समाज की निरंतरता असंभव हो जाती। इस प्रकार, मानवीय मूल्यों की सभी अवधारणाओं को उनके स्थायी और साथ ही गतिशील चरित्र दोनों के लिए जिम्मेदार होना चाहिए। मूल्य व्यक्ति में बने रहते हैं क्योंकि वे उसकी पहचान की भावना का हिस्सा बन जाते हैं।

यदि साहित्य का हृदय मानव अनुभव की खोज है, तो साहित्य के काम के औपचारिक और सौंदर्य संबंधी गुणों पर विचार सामाजिक मूल्यों और काम द्वारा प्रस्तुत नैतिक दुविधाओं पर

विचार करने के लिए गौण होना चाहिए। बर्टोल्ट ब्रेख्त ने एक बार कहा था कि वह नहीं चाहते कि लोग थिएटर के बारे में सोचकर उनके नाटकों को छोड़ दें, वे चाहते थे कि लोग दुनिया के बारे में सोचकर अपने नाटकों को छोड़ दें। इसी तरह, हमारा छात्र साहित्य का उपयोग दुनिया के बारे में सोचने के लिए करना चाहता है, न कि केवल साहित्य के औपचारिक पहलुओं के बारे में सोचने के लिए। साहित्य कई मानव जीवन में योगदान देने का कार्य भी करता है। शिक्षा कार्यक्रम में, साहित्य छात्रों के विकास और ज्ञान के लिए महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। शिक्षा में साहित्य के योगदान में आंतरिक मूल्य और बाह्य मूल्य शामिल हैं। आंतरिक मूल्य वास्तव में साक्षर व्यक्ति में पहचानने योग्य जीवन भर के व्यापक पठन का पुरस्कार हैं, जबकि आंतरिक मूल्य भाषा कौशल और ज्ञान के विकास की सुविधा प्रदान करते हैं। साहित्य और समाज के बीच संबंध की चर्चा आमतौर पर डी बोनाल्ड से प्राप्त वाक्यांश से शुरू करके की जाती है कि ष्साहित्य समाज की अभिव्यक्ति है।ष लेकिन इस स्वयंसिद्ध का क्या अर्थ है? यदि यह मानता है कि साहित्य किसी भी समय, वर्तमान सामाजिक स्थिति को ष्सही ढंग सेष प्रतिबिंबित करता है, तो यह गलत हैय यह सामान्य, तुच्छ और अस्पष्ट है यदि इसका अर्थ केवल यह है कि साहित्य सामाजिक वास्तविकता के कुछ पहलुओं को दर्शाता है।

उपन्यासों में आख्यानों के माध्यम से उन्हें अपनी दिनचर्या से परे नई दुनिया से परिचित कराने का उद्देश्य भी उनके क्षितिज का विस्तार करने में मदद करता है। वे सीखते हैं कि नस्ल, संस्कृति और सामाजिक प्रतिष्ठा के मामले में भिन्न होने के बावजूद लोग साझा मानवीय मूल्यों के माध्यम से कैसे जुड़ सकते हैं। इसके अलावा, इस तथ्य के बावजूद कि कुछ छात्रों को अंग्रेजी में अपने विचारों को व्यक्त करने में कठिनाई होती है, जब उन्हें कक्षा के सामने प्रस्तुत करना होता है, उन्हें अपना आत्मविश्वास खोए बिना गलती करने का प्रयास करने के लिए एक मंच प्रदान किया जाता है। इसके अलावा, टर्म प्रोजेक्ट जो उन्हें अपने परिचित समुदाय के लोगों के बारे में जानने की अनुमति देता है, उन्हें अपने आसपास की दुनिया में योगदान करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इस अवलोकन से, यह कहा जा सकता है कि छात्र हमेशा स्वयं को संज्ञानात्मक और भाषाई रूप से सुधार सकते हैं यदि उन्हें कक्षा की गतिविधियों में योगदान करने और अपने विचार उत्पन्न करने का अवसर प्रदान किया जाता है। यदि उन्हें विश्लेषणात्मक कौशल और दुनिया का ज्ञान प्रदान किया जाता है, तो वे अधिक बोधगम्य और अधिक समझदार भी बन सकते हैं।

निष्कर्ष

साहित्य का अध्ययन और अभ्यास संचयी होता है, समय के साथ एक संस्कृति की पहचान का निर्माण करता है। प्राचीन यूनान के दर्शन और महाकाव्य काव्य से पश्चिमी साहित्य के सिद्धांत का उदय हुआ। इतिहास के प्रत्येक उत्तरोत्तर काल ने उस समय की भावना को प्रतिबिंबित करने वाली विशिष्ट साहित्यिक कृतियों का निर्माण किया, लेकिन इसमें पूर्ववर्ती युगों के तत्व भी शामिल थे। मध्यकालीन साहित्य में ईसाई धर्म के सिद्धांत शामिल हैं, जबकि पुनर्जागरण और ज्ञानोदय के साहित्य ने कला और विज्ञान में प्रगति का जवाब दिया। सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत चुनौतियों की पहचान करने की प्रक्रिया महत्वपूर्ण चरण हैं जब तक कि हम स्पष्ट रूप से नहीं जानते कि आंतरिक रूप से और सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक वातावरण दोनों में हमारी बाधाएं क्या हैं, हम अपने मूल्यों के विकास में यथार्थवादी नहीं हो सकते।

संदर्भ

1. बार्टलेट, जॉन। परिचित उद्धरण प्राचीन और आधुनिक साहित्य में उनके स्रोतों के लिए पैसेज, वाक्यांश और नीतिवचन का संग्रह। बोस्टन लिटिल, ब्राउन, 1992। कॉल नंबर रेफरी पीएन 6081। बी 27 1992।

2. बेनेट, विलियम रोज एड। पाठकों का विश्वकोश। न्यूयॉर्क क्रोवेल, 1965। कॉल नंबररू रेफरी पीएन 41। बी4 1965।
3. ब्रैकन, जेम्स के. रेफरेंस वर्क्स इन ब्रिटिश एंड अमेरिकन लिटरेचर। एंगलवुड, सीओ लाइब्रेरी अनलिमिटेड, 1998। कॉल नंबर रेफरी जेड 2011। बी74 1998।
4. बढ़ई, हम्फ्री। बच्चों के साहित्य के लिए ऑक्सफोर्ड साथी। ऑक्सफोर्ड ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1984। कॉल नंबररू रेफरी पीएन 1008.5. 1984।
5. हार्नर, जेम्स एल. लिटरेरी रिसर्च गाइडरू एन एनोटेटेड लिस्टिंग ऑफ रेफरेंस सोर्सेज इन इंग्लिश लिटरेरी स्टडीज। न्यूयॉर्क मॉडर्न लैंग्वेज एसोसिएशन ऑफ अमेरिका, 1998। कॉल नंबर 2011 .1998।
6. होल्मन, सी. ह्यूग। साहित्य के लिए एक पुस्तिका। इंडियानापोलिस ओडिसी प्रेस, 1972। कॉल नंबररू रेफरी पीएन 41। एच 6 1972।
7. द जॉन्स हॉपकिंस गाइड टू लिटरेरी थ्योरी एंड क्रिटिसिज्म। बाल्टीमोररू जॉन्स हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी प्रेस, 2005। कॉल नंबर रेफरी पीएन 81। जे554 2005।
8. मार्क्युज, माइकल जे। अंग्रेजी अध्ययन के लिए एक संदर्भ गाइड। बर्कले, सीए कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस, 1990। कॉल नंबर रेफरी पीआर 56। एम 37 1990।